उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा रचित ग्रंथ साहित्य एवम् उनका सांगीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा

पी.एच. डी. (संगीत) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोधकर्ता – (Researcher)

श्री विश्वास विजयकुमार संत

रजिस्ट्रेशन नं.FOPA/47 रजिस्ट्रेशन दिनांक-०६ दिसंबर २०१४

मार्गदर्शक का नाम (Guide)

प्रोफेसर डॉ. अहमदरज़ाखान सरवरखान पठाण

डिपार्टमेंट ऑफ इन्स्ट्रुमेन्टल म्युज़िक (सितार एवं वायोलिन)

फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्टस्

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा

संक्षिप्ति- (Summary)

उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा रचित ग्रंथ साहित्य एवम् उनका सांगीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका-

भारतीय शास्त्रीय संगीत, विश्व की सर्वाधिक, प्राचीन ऐतिहासिक, रमणीय, मधुर व रंजक परंपरा है । जिसने पुरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करते हुए इसे जानने, समझने व सिखने के लिये प्रेरित किया, साथ-साथ इस ऐतिहासिक परंपरा के साथ जुड़ने की लालसा भी उनके मन में उत्पन्न की है । संगीत चाहे कोई भी हो, भारतीय हो या पाश्चात्य् उसमें गाये-बजाये जाने वाले स्वरों के माध्यम से उत्पन्न भाव उसका मुख्य आकर्षण है। तभी तो संगीत को विश्व कक्षा की भाषा या बोली समझी जाती है । यदि हम भारतीय संगीत की बात करें तो उसमें एक ऐसी ताकत तथा विशिष्टता है कि श्रोता चाहे भारतीय हो या पाश्चात्य् वह उसके मोह में अवश्य ही आ जाता है ।

ईश्वर सर्जित इस भारतीय संगीत कला को वर्तमान समय में पूरे विश्व में आदर सम्मान के भाव से देखा सुना जाता है । परंतु इस स्थिति तक पहुँचने के लिए भारतीय संगीत को काफी संघर्ष करना पड़ा । देश पर बार-बार होने वाले विदेशी आक्रमणे और उनके शासन काल में भारतीय संगीत में कई परिवर्तन हुए। ईश्वर की साधना एवं मोक्ष प्राप्ती का माध्यम माने जाने वाली यह कला मुगलों के शासन काल में केवल मनोरंजन मात्र का साधन बनकर रह गई थी। अंग्रेजो के शासन काल में संगीत की अधिक दुर्दशा हुई । केवल व्यापार करने की दृष्टि से भारत आने वाले अंग्रेजो ने भारतीय संगीत को आदिम और अवैज्ञानिक मानते हुए उसकी अवहेलना की ।

उपयुक्त कारणों से शिष्ट समाज में संगीत कला के प्रति अनादर बढ़ता गया । संगीत को शुद्र पकृति का मानकर उसे सिखने और समझने के लिए लोग परहेज करने लगे ।

भारतीय संगीत को इस दयनीय परिस्थिति से उबारने के लिए १९वीं शताब्दी में कई विद्वान संगीतज्ञों, समाज सूधारकों, शास्त्रकारों इत्यादि के द्वारा महत्व पुर्ण सांगीतिक कार्य किए गए । इन विद्वानों ने बड़ौदा के दरबारी संगीतज्ञ उस्ताद मौलाबक्ष का योगदान सही अर्थो में अविस्मरणीय एवं अभुतपूर्व है । मौलाबक्ष के प्रयत्नों के फलस्वरुप ही वर्तमान समय में भारतीय संगीत विश्व फलक पर सर्वोच्च स्थान पर बिराजमान है, यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होंगी।

प्रकरण : १. बड़ौदा कि सांगीतिक परंपरा- एक संक्षिप्त अभ्यास

(१७६२ से १९५० तक)

बड़ौदा के सांगीतिक इतिहास का अभ्यास करने से यह विदित होता है, कि उस्ताद मौलाबक्ष ने अपने जीवन का सर्वाधिक व अमूल्य समय बड़ौदा में ही व्यतीत किया था । मौलाबक्ष ने बड़ौदा के लगातार तीन शासक १.खंडेराव गायकवाड़ (शासनकाल १८५७-१८७०), मल्हारराव गायकवाड़ (शासनकाल १८७०-१८७५) और सयाजीराव गायकवाड़ (शासनकाल १८८१-१९३९) के कार्यकाल में अपनी सांगीतिक सेवाएँ प्रदान की थी । विशेष रुप से इन तीनों शासकों के शासन काल के दरम्यान शास्त्रीय संगीत को बड़ौदा में काफी मान सम्मान प्राप्त हुआ । संगीत एवं नृत्य के शौकिन इन गायकवाड़ शासकों ने देश के कई प्रतिष्ठित कलाकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया था । उनके इसी प्रोत्साहन के फलस्वरुप आज बड़ौदा एवं देश में शास्त्रीय संगीत पुनः अपने सर्वोच्च स्थान पर बिराजमान होने में सफल हुआ है ।

सयाजीराव तिसरे के पूर्व गायकवाड़ महाराजाओ ने संगीत के महत्व को समझते हुए संगीत को अपने दरबार में स्थान दिया था परंतु उस समय कि विपरित परिस्थीतीओं के कारण संगीत एक सिमीत दायरे में बंध चुका था । युगद्रष्टा सयाजीराव गायकवाड़ तिसरे के शासन काल में उनके प्रयत्नो एवं प्रोत्साहन के परिणाम स्वरुप बड़ौदा में संगीत ने असीम उँचाईयो को छु लिया था। "कलावंत कारखाने" को आधुनिक एवं सुव्यवस्थित बनाने का प्रयत्न, विभिन्न विधाओ के संगीत कलाकारों को राज्याश्रय, संगीत शिक्षा, समाज में संगीत का प्रचार-प्रसार इत्यादि क्षेत्रो में सयाजीराव द्वारा किए गए कार्यो कि संक्षिप्त माहिती देने का प्रयत्न इस प्रकरण के अंतर्गत किया गया है ।

प्रकरण : २. उस्ताद मौलाबक्ष का परिचय एवम् सांगीतिक योगदान

उस्ताद मौलाबक्ष का जन्म –

सन १८३३ में पंजाब के भिवानी शहर में मौलाबक्ष का जन्म हुआ। बचपन में शोलेखान के नाम से पहचाने जानेवाले इस बालक को खेल-कूद, पहलवानी में विशेष रुचि थी । तीन वर्ष की उम्र में ही माता-पिता के निधन के पश्चात उनके चाचा ईमाम खान एवं नानाजी अनवरखान द्वारा शोलेखान का लालन-पोषण हुआ । बचपन से ही सेवा-सुश्रुषा के अनुरागी शोलेखानने एकबार गाँव में आनेवाले फकीर की खूब सेवा-चाकरी की। शोलेखान से खुश होकर फकीर ने उन्हें नया नाम दिया, वह था "मौलाबक्ष"। और आशिर्वाद दिया कि इस नाम से वे संगीत दुनिया में पहचाने जाएंगे । वही से शोलेखान ने "मौलाबक्ष" नाम का स्वीकार किया और संगीत-साधना के मार्गं पर चल पडे।

मौलाबक्ष कि संगीत शिक्षा – मौलाबक्ष को संगीत की प्रारंभिक शिक्षा उनके नानाजी अनवरखान से प्राप्त हुई । तीन वर्ष तक गायन और बीन की शिक्षा अर्जित करने के बाद मौलाबक्ष ने संगीत की अग्रीम तालीम के लिए बड़ौदा के

विद्वान दरबारी संगीतज्ञ उस्ताद घसिट खान से ध्रुपद और रुद्रविणा की शिक्षा प्राप्त की ।

सांगीतिक यात्रा : संगीत सिखने की पुरी लगन, महेनत, गुरु भावना एवं विनम्रता के फल स्वरुप अल्प समय में ही युवा मौलाबक्ष देश के प्रतिष्ठीत संगीतज्ञों में अपना विशिष्ट स्थान अर्जित कर लिया था । कोल्हापुर, बड़ौदा, मैसूर, कलकत्ता, जयपुर, हैदराबाद जैसे नामांकित राजदरबारों से मौलाबक्ष को सांगीतिक सेवा हेतु आमंत्रित दिया जाता था । अपनी संगीत यात्रा के दौरान मौलाबक्ष छोटे-बड़े सभी से कुछ न कुछ नया सिखने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे ।

मैसूर में राज्याश्रय के दौरान मौलाबक्ष दक्षिणी संगीत से बहुत प्रभावित हुए थे । दक्षिणी संगीत और उसके शास्त्र को जानने सिखने की जिज्ञासा मौलाबक्ष के मन में पनपने लगी । परंतु वे केवल मुस्लीम होने की वजह से ब्राह्मणों की यह विद्या सिखना उनके लिए वर्जित है, ऐसे संकुचित विचारधारा से मौलाबक्ष काफी व्यथित हुए । दृढ़ निश्चयी मौलाबक्ष ने दक्षिणी संगीत विद्या सिखने हेतु मैसूर दरबार के राज्याश्रय का त्याग किया और दक्षिण के विभिन्न प्रांतो के प्रवास पर निकल पड़े । अंत में मौलाबक्ष की संगीत सिखने की दृढ़ इच्छा और विनम्रता से प्रभावित होकर तांजोर के संगीतज्ञ सुब्रहमण्यम अय्यर ने मौलाबक्ष को कर्णाटकी संगीत के क्रियात्मक और शास्त्र का ज्ञान प्रदान किया ।

विभिन्न राज्यों कि यात्रा के दरम्यान मौलाबक्ष को यह महसुस हुआ की संगीत को केवल मनोरंजन का ही साधन माना जाता है । अत: एक उच्च कला के रुप में भारतीय संगीत को समाज में आदर सम्मान प्राप्त करवाना मौलाबक्ष के जीवन का उददे्श्य बन चुका था ।

गायनशाला – मौलाबक्ष के सबसे प्रमुख कार्यो में से एक था "गायनशाला" कि स्थापना । संगीत को राजाओं के दरबार, महलों के सिमित दायरे से बाहर निकालकर उसे आम जनता के सन्मुख रखने का श्रेय मौलाबक्ष को अवश्य ही जाता है । "गायनशाला" की स्थापना के माध्यम से मौलाबक्ष ने समाज को संगीत सीखने-जानने-परखने व सुनने का सुवर्ण अवसर प्रदान किया ।

उत्तर और दक्षिणी संगीत सिखने के लिए मौलाबक्ष को जिन कठिनाईओ का सामना करना पड़ा, वैसा संघर्ष अन्य किसी संगीत जिज्ञासुओं को न करना पडे, इस हेतु से मौलाबक्ष ने बड़ौदा में महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतिय के प्रोत्साहन से सन १८८६ में गायनशाला की स्थापना की ।

मौलाबक्ष द्वारा स्थापित इस गायनशाला के मुख्य सिद्धांत इस प्रकार से थे ।

१. गायन का ज्ञान एक आभूषण के रुप में देना ।
२. लोगों में गायन के प्रति अभिरुचि पैदा करना ।
३. संगीत एवं उसके शास्त्रों को पुर्नरुजीवन के लिए प्रयास करना ।

१९ वीं शताब्दी में देश भर में मौलाबक्ष के पूर्व और समकालीन कई संगीत विद्वानों, समाज सुधारकों द्वारा विभिन्न प्रांतों में संगीत शालाओं की स्थापना हो चुकी थी । किन्तु मौलाबक्ष की गायनशाला अन्य संगीत शालाओं की तुलना में कई अधिक आधुनिक और वैज्ञानिक थी । मौलाबक्ष समकालीन स्थापित संगीत शालाओं के विपरीत मौलाबक्ष की गायन शाला में सभी जाति, धर्म या संप्रदाय के लड़को और लड़कीयों को बिना किसी भेद-भाव के प्रवेश दिया जाता था । स्वरलिपि आधारित सामूहिक शिक्षा प्रणाली, योजना बद्ध अभ्यासक्रम, ब्लैक बोर्ड-चोक का प्रयोग, अभ्यास लक्षी ग्रंथो का प्रकाशन, लेखित

व क्रियात्मक परिक्षाए एवं मुल्यांकन पद्धति, संगीत विषय में डिप्लोमां की पदवी, छात्र वृत्ति, भारतीय एवं पाश्चात्य् संगीत की शिक्षा, गायन के साथ साथ विविध वाद्यों की शिक्षा, नियत कक्ष, नियमित समय पत्रक और निष्णांत शिक्षक इत्यादि मौलाबक्ष के स्कुल की विशेषता हि मौलाबक्ष को भारतीय संगीत के लिए उपयुक्त गायनशाला का आविष्कर्ता माना जाता है । वर्तमान समय में संगीत कॉलेज, फॅकल्टी या निजी संस्थानों में इसी प्रकार संगीत शिक्षा दि जाती है । १३३ वर्ष पूर्व इस संकल्पना को अस्तित्व में लाने का श्रेय युगद्रष्टा मौलाबक्ष को ही जाता है ।

ग्रंथ-साहित्य

अभ्यास लक्षी ग्रंथ साहित्य का निर्माण करना यह भी मौलाबक्ष के महत्वपूर्ण कार्यो में से एक था । उन दिनों संगीत में बढ़ती हुई श्रृंगारीकता के परिणाम स्वरूप सभ्य समाज के लोग संगीत को सीखने समझने से परहेज करने लगे थे । संगीत के प्रति लोगों की इन भावनाओं बदलने हेतु मौलाबक्ष ने अपनी स्वरलिपि में अभ्यासलक्षी दर्जेंदार ग्रंथ-साहित्य का निर्माण किया । गुजरात के प्रचलित संत कवियों नरसिंह महेता, प्रेमानंद, मिराबाई तथा शंकराचार्य, मन्नृसिंहाचार्य, सुन्दर, नानक इत्यादि के भजनों, पदों को आधार बनाकर विविध रागों में बंदिशो को निबद्ध किया गया । दुसरी महत्वपुर्ण बात यह थी की इन ग्रंथों की रचना बड़ौदा में बोली समझी जानेवाली प्रादेशिक भाषाएँ जैसे की गुजराती, मराठी, हिन्दीं में की गई थी। इस तरह देशी भाषाओं में संगीत की शिक्षा और उसमें भी संगीत के साथ आध्यात्म्, भक्ती को जोडने से जन मानस पर इसकी गहरी असर हुई और परिणाम स्वरुप लोग संगीत सीखने के प्रति प्रेरित हुए।

प्रकरण : ३.

उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा निर्मित स्वरलिपि का अध्ययन

"स्वरलिपि" यह आज संगीत की न केवल आवश्यकता है परंतु स्वरलिपि और संगीत यह दोनों एक ही सिक्के की दो पहलू बन चूके है । "स्वरलिपि" आज संगीत के लिए न केवल प्रारंभिक विधार्थी परंतु सभी स्तर के विद्यार्थी, कलाकार, अभ्यासार्थी, शोधार्थी के लिए एक आर्शीवाद स्वरूप है । "स्वरलिपि" का अभ्यास व शोध का एक रोचक विषय भी बना हुआ है । "स्वरलिपि" ने ही हमें हमारी प्राचीन संगीत संस्कृति को लुप्तप्रायः होने से बचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा हमें हमारी प्राचीन संस्कृति को सिखने, समझने का एक अमूल्य अवसर भी प्रदान किया है ।

अतः इस प्रकरण में हम मुख्य रुप से उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा निर्मित स्वरलिपि के विषय में चर्चा करते हुए स्वरलिपि के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है । उ.मौलाबक्ष जी कि स्वरलिपि की तुलना पं.भातखंडे जी व पं.पलुस्कर जी कि स्वरलिपि से करते हुए उनके भेद बताये गये है ।

प्रकरण : ४.

उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा रचित ग्रंथ-साहित्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध प्रबंध के इस अंतिम चरण में अर्थात् प्रकरण-४ में प्रो. मौलाबक्ष द्वारा रचित प्रथम पुस्तक "संगीतानुभव" व संगीत शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनो की चीजों के छह क्रमिक पुस्तकों के सांगीतिक रचनाओं के राग, ताल, रचना के संदर्भ में संक्षिप्त में विश्लेषण किया गया है । श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा साहब के आशिर्वाद व प्रोत्साहन से व प्रो. मौलाबक्ष द्वारा उनके ही स्वरलिपि में रचित व प्रकाशित सातो पुस्तकें महत्वपूर्ण व बहुमुल्य है । इन सातों पुस्तकों की सूची निम्न प्रकार से है ।

पुस्तको की सूची

१. संगीतानुभव

२. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-१

३. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-२

४. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-३

५. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-४

६. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-५

७. गायन शाळाओं में चलाए जाने वाली गायनों की चीजों का भाग-६

उपसंहार (CONCLUSION)

इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत जानकारी काफी उपयोगी, महत्वपूर्ण व अमूल्य है। इस प्रबंध का उददेश्य् केवल महाविद्यालय की उच्चतर उपाधि हॉसिल करना नहीं है परंतु उस्ताद मौलाबक्ष के सांगीतिक कार्यो को संगीत समाज के समक्ष रखते हुए उनके कार्यों को साहित्य के रूप में जतन करना भी है।

वर्तमान समय कि संस्था महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी की फॅकल्टी ऑफ परफोर्मिग आर्टस के नाम से प्रसिद्ध है । यह संस्था महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ व उस्ताद मौलाबक्ष की अमूल्य देन है । इस संस्था में बड़ौदा के अलावा दूर-दूर के गाँव-शहेरों व देश-विदेश से विद्यार्थी यहाँ अभ्यास हेतु आते है। इस विद्या का प्रचार-प्रसार होता हुआ देखकर मैं ईश्वर का, श्रीमंत महाराजा सयाजीराव व उस्ताद मौलाबक्ष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस लुप्त होती हुई विद्या को पुर्नजिवन देते हुए उसके भविष्य को सुरक्षित व उज्वल कर दिया है।

उस्ताद मौलाबक्ष का योगदान अविस्मरणीय है तो उनके जैसी विभूतियों द्वारा रचित अमूल्य ग्रंथो को विभिन्न विद्युत उपकरणों के माध्यम से जतन करके आनेवाली सांगीतिक पीढ़ी को सुरक्षित रूप में पहुँचाना ही इस शोध-प्रबंध का मुख्य हेतु है।

भारतीय संगीत शिक्षा को आधुनिक व वैज्ञानिक बनाने के लिये, सामूहिक शिक्षा आधारित गायन शाला का निर्माण, अभ्यास लक्षी ग्रंथ साहित्य का प्रकाशन, परिक्षा एवम् मूल्यांकन पद्धति, महिला संगीत शिक्षा, व सबसे महत्वपूर्ण भारतीय संगीत के लिये उपयुक्त एक स्वदेशी स्वरलिपि का आविष्कार करने का श्रेय मौलाबक्ष को ही प्रदान किया जाता है ।